



ग्रहण विवरण (विक्रम सम्वत् 2077)



विक्रम संवत् 2077 में 25 मार्च 2020 से 12 अप्रैल 2021 के मध्य में समस्त भूमण्डल पर 2 सूर्य ग्रहण होंगे।

- | | | | |
|--------------------------|------------|------|-----------------|
| 1. कंकणाकृति सूर्य ग्रहण | 21 जून | 2020 | भारत में दृश्य |
| 2. खग्रास सूर्य ग्रहण | 14 दिसम्बर | 2020 | भारत में अदृश्य |

कंकण सूर्य ग्रहण : 21 जून 2020 आषाढ कृष्ण अमावस्या रविवार को प्रातः 9.16 बजे से प्रारम्भ होकर दोपहर 15.04 बजे तक रहेगा। भारत में प्रातः 10 बजे से लेकर दोपहर 14.31 बजे तक देखा जा सकेगा।

राजधानी दिल्ली में ग्रहण का समय निम्न प्रकार है, अन्य शहरों में समस का अन्तर दिशा के अनुसार भिन्न-भिन्न हो सकता है।

ग्रहण प्रारम्भ :	10.20	ग्रहण पर्वकाल :	03 घण्टा 28 मिनट
ग्रहण मध्य :	12.02	ग्रहण सूतक :	शनिवार 20 जून 2020
ग्रहण समाप्त :	13.48	रात्रि में 10 बजकर 20 मिनट से प्रारम्भ होगा।	

यह ग्रहण मिथुन राशि में हो रहा है अतः मिथुन, कर्क, वृश्चिक, कुम्भ तथा मीन राशि वालों के लिए अशुभ। वृष, तुला एवं धनु राशि वालों के लिए सामान्य। मेष, सिंह एवं मकर राशि वालों के लिए शुभदायक होगा।

इनके अतिरिक्त 5 जून, 5 जूलाई तथा 30 नवम्बर 2020 में तीन उपछाई चन्द्रग्रहण भी होंगे, वास्तव में यह ग्रहण नहीं होते, केवल चन्द्रमा पृथ्वी की विरल छाया में गुजरता है, जिसे ग्रहण नहीं माना जाता। इसलिए पर्वदिक महत्व भी नहीं माने जाते।

विशेष: 1. जिस स्थान पर ग्रहण दिखाई पड़ता है वहाँ सूतक तथा अन्य नियमों का पालन किया जाता है। 2. जिन राशियों के लिए ग्रहण शुभ नहीं होता उन्हें ग्रहण की छाया से भी बचना चाहिए तथा जप, हवन, दान आदि करना चाहिए। 3. ग्रहण काल में देव स्पर्श, खाना-पीना, निद्रा, शौच-मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए, भजन, जप आदि में मन लगाना चाहिए। सूतक में (बाल, वृद्ध और रोगी को छोड़कर) अन्न-भोजन नहीं करना चाहिए। अति आवश्यक हो तो फलाहार ले सकते हैं।

जिन विदुषी महिलाओं के उदर में शिशु पल रहे हों, उन्हें तीक्ष्णधारदार चाकू, छुरी, दंरात, गंडासा आदि से फल सब्जी इत्यादि नहीं काटने चाहिए। साड़ी के पल्लू को गेरु से रंगकर बैठना चाहिए, जिससे गर्भस्थ शिशु ग्रहणजन्य दुष्प्रभाव से सुरक्षित रहता है।

यदि ग्रहण न देखें तो बहुत अच्छा रहता है।